

पं मुनि॥ न स्येन स्वस्ति वाक्केन दत्तं देवता ह मि॥ अथा
व्यावीषा विषयादि दवता ह मि॥ धनं न मुद्रा पि
नगने॥ १॥ इन्द्राय॥ एन॥ ४॥ प्रादना विषी ह स्था॥
समाधिरुत॥ अस्याहा॥ समत वि॥
न हं रुद्र न हो नाड स्य ह म नी॥
दिनी॥ इन्द्राय विषम मे स्थाहा॥
गप्रदी म नाय स्थाहा॥ न ह

लदनके ॥ दशधियुजा न ॥ देय न वश ॥
 धवा पञ्च नः धूनका जमा न ॥ देय न वश ॥
 सफमिवका नयन ॥ धन ॥ देय न वश ॥
 नशयः सूर्या विं वी ॥ देय न वश ॥
 हा ॥ देय न वश ॥ देय न वश ॥

आ ॥ अरुकाधि

1. 335

सर्वविद्या नू काल हू ॥ मलुन दयका वश
 या ॥ धन सान वीय ॥ देय न वश ॥
 जय स्यां पगि सुखा हा ॥ देय न वश ॥
 स्यां पगि सुखा हा ॥ देय न वश ॥
 सुखा हा ॥ देय न वश ॥
 य नम ॥ व मध्यम ॥ देय न वश ॥

मिच्छुखाहा॥ॐ आ४ लादिवाय वज्रपूष्यं पुनिच्छु
खाहा॥ॐ आ४ वाचस्यनयः वज्रपूष्यं पुनिच्छु
खाहा॥ॐ आ४ गवायः पूष्यं पुनिच्छुखाहा॥ॐ अ
भिश्चवायः वज्रपूष्यं पुनिच्छुखाहा॥ॐ आ४ क
सवः वज्रपूष्यं पुनिच्छुखाहा॥ॐ आ४ क
पूष्यं पुनिच्छुखाहा॥ नवदि॥ॐ कृति

ॐ आदिमियखाहा॥ॐ मगमियखाहा॥ॐ आ४
यखाहा॥ॐ पुनर्वसुखाहा॥ॐ पूष्यायखाहा
॥ॐ अश्लेषायखाहा॥ॐ ज्येष्ठा॥ॐ मघाका
यखाहा॥ॐ पूर्वफाल्गुनीखाहा॥ॐ उग्रखा
हा॥ॐ हस्तायखाहा॥ॐ चित्रायखाहा

॥ॐ स्वास्ति यस्वाहा॥ॐ विष्ठा वाय स्वाहा॥ॐ नम
स्वि न॥ॐ नम नावाय स्वाहा॥ॐ अवाय स्वाहा॥
ॐ मनीय स्वाहा॥ॐ वृषावाय स्वाहा॥ॐ
उग्रवाय स्वाहा॥ॐ अहि विग्रय स्वा
हा॥ॐ वनय स्वाहा॥ॐ नयस्वि म॥ॐ ध
न स्वाय स्वाहा॥ॐ नतवयाय स्वाहा॥ॐ

यूर्व रुद्राय स्वाहा॥ॐ उग्र रुद्राय स्वाहा॥
ॐ तव तिय स्वाहा॥ॐ अरुनिय स्वाहा॥
ॐ रुद्रनिय स्वाहा॥ॐ नतवयाय स्वाहा॥ॐ ॐ
द्राय स्वाहा॥ॐ यूर्व॥ॐ यमाय स्वाहा॥ॐ दिन
॥ॐ वरुनाय स्वाहा॥ॐ यस्वि म॥ॐ कवचाय
स्वाहा॥ॐ उग्र॥ॐ अवाय स्वाहा॥ॐ अवाय

ॐ नमो ग्या खाहा ॥ नमो ग्या ॥ ॐ वाय य खाहा ॥ वा
यय ॥ ॐ ॥ श्रीमानाय खाहा ॥ श्रीमाने ॥ धनस्य
नक्षत्रे वनय ॥ रावना ॥ निकम लमध्वलका
लेन सूर्यविमंता वनक वहुदिमुजासका
सात्रयमा नुरं विहाय ॥ ध्रुव ध्यानमनुव ॥ रिगु
सिध ॥ ज्ञान ॥ खान ॥ नेवाय ॥ धनिता ॥ मग ॥ द्य

धंवा दं कना ॥ सुनि ॥ धन ॥ अय ॥ नृ संनस्य
संखस ॥ नृ ॥ गाय ॥ अय ॥ इवयल ॥ लाहीलखा ॥
अयमग ॥ ॐ नमो गवने ॥ आदित्याय ॥ का
स्ययलगाय ॥ अदिनिगरुसंरु गाय ॥ कलि
गदलगाय ॥ अत्रुनसहि गाय ॥ कर्कन

न. यत्र नागवंशक. कुसुमसहिभाय. न. क.
वासत्रक. पूष्य. ऊ. ह्य. प्रविनाय. पी. चाय. उ. र्त्त.
गत्रथ. महात्र. टाय. द. व. दानव. क. त. गु. कि.
नेत्र. सहि. नाय. श्र. व. ग. ल. श. ग. व. म. न. उ. य. त. त. दि.
ना. थ. म. य. श्र. ग. ग. ह. म. गु. ल. म. ध. य. अ. न. उ. प्र. वि. श्र.

ॐ. द. म. क. ग. ४. ग. ध. पू. ष्य. धू. य. दि. या. य. ह. ल. यं. ति.
श्र. द. अ. म. य. नि. म. र. क. ना. न. मा. म. गु. य. म. य. कि.
य. क. ग. क. म. ग. सा. या. नि. क. श. र. व. द. न. य. गु. म.
नि. य. पू. ष्टि. कू. त्र. कू. प्रि. य. ज. म. नि. ग. ह. म. आ. दि. य. म.
य. दि. वा. क. त. लो. च. ना. य. न. ज. ह. य. त. व. ग. य. मा.

चनाय, शूर्ययति शु. स्यात् ॥ शंखयुजाया
 यरुके ॥ मधुलविनके ॥ खानननके ॥ कुमा
 यन ॥ सविन ॥ मधुलविनके ॥ दकुना
 पूजा ॥ शमिर्वादि विन ॥ धात्रुविनके ॥
 सुयुक्त ॥ सुय ॥ सुसि ॥ दिनि स ॥ ३५ ॥ धनि

शा. म. म. म.

ASHA ARCHIVES

३३५

धूनका ॥ ३५ ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥
 सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥
 सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥
 सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥
 सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥
 सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥ सुसि ॥

[illegible]

न्यासाः ॥ १ ॥ न गो अग्निं कुरु न कुरुवान् अधिष्ठान ॥ इव
कमलं शशाङ्क ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्री
तावत्तु धर्मसंघेन गाथा ॥ ४ ॥ धीना तमस्तु ॥ इति श्री
नैऋत्यं कुरु कुरु स्वस्ति स्वाहा मध्यमे ननु कुरु स्वाय नमो नमो
अग्नि स्वाय नमो ॥ ॥ यन कुरु मेनासः सितं तस्य नुनामि मि
स्वाय नमो ॥ ॥ तावत्तु ध्याय कुरु ॥ इति श्री २ ॥ स्वस्ति वायं
उच्यते नमो ॥ अहं नदिपदिया विद्या विषयः महाशुभं

यक्यवाहनाय दानपते अमृत्य अमृत्य निमित्तार्थः अमृत्य
स्वाय नमो कुरु कुरु ॥ इति श्री २ ॥ तावत्तु ॥ ननु वा
त्रिनामि मध्यं कुरु कुरु पद्मसारीयः तदपेति तं ता नमि मनु
नरकाग्री कुरु पातवर्ष मे कसूर्यः च नु नुनां वा मे दनु क म
नु नु धर्मे सव्यवत दा कुरु माता धा पाता स्वना हन नी यही प
विनिर्न प्रि नु नु दा स कुरु धा त्रिनी वर सव्या ले कु नमी त्रिनी
समयाग्नि विहा वर ॥ ३ ॥ नु हे हि महाशुभं देव विद्विज सगम

गृह्यारुणिमहागन्धिसनिहिनी एवम्वहा डं आष्टर्किज ४ हं २८
किं नाज ४ हो ४ ॥ वजा कज दि निङ्गा जेत ॥ हताग्नि ॥ वामकज
कीय ॥ ॥ ३ अग्निदीपदिवा विषा विषा महान्नय हव्यकव्य
वारुनाय ॥ ४ गज ४ हव हो ४ समयस्त्व वज तेज अश ४ समयान्निवि
लाये ॥ ३ वज न इ प्रीक्ष न प्रिति रु स्वा हो ॥ गं व न न ला य ॥ य व ग व्य ॥
३ अग्नाय प्रव न स स्ता गाय या धं अ व व अ व स न प्र गिय रु स्वा
ह ॥ प्रीक्ष न ॥ स्नान ॥ ला ॥ धी ॥ मुनि ॥ ला ॥ ध्या ॥ मं ॥ ग ॥ व्य ॥ न ॥ धे न को
व की ॥ ३ वज सत्वा अश ॥ मं कु न वा ज ॥ ३ सर्व पाप दहन वज

यु सर्व पाप दह स्वा हा ॥ अ म नु न स्व च के ॥ स्व स्व न न न न ह व्य अ
धि क्षान या या ॥ जो य य के ॥ न नो अग्नि मूर्ध नै का न न न न वज य व
॥ मूल प्रमाने विहा व ॥ ३ अश व म न प्र गिय रु स्वा हो ॥ धे न
प वि फ ३ ह या ली ॥ स सि ध प त्रिया त्या इ रु या न ॥ धे न स य डा य डि
अ पि अ दि यं द य इ न ॥ ३ अग्ने य स्वा हा ॥ धे न ॥ ३ अर्क य स्वा हा
अ र्क सि ॥ ३ वज सी मा य स्वा हा ॥ य डा स सि ॥ ३ वजी ग न य स्वा
हा ॥ र व ति न सि ॥ ३ वज वृ द्वा य स्वा हा ॥ अ या मा र्ग न ३ वज कू व

नाय स्वाहा ॥ व ० सि ॥ डं वज्र यहाय स्वाहा ॥ इति त्रिसि ॥ डं वज्र गनि
नाय स्वाहा ॥ भनिक ० सि ॥ डं वाधिव दाय स्वाहा ॥ क डन ग सि
डं वज्र ने नाय न नाय स्वाहा ॥ पिना य सि ॥ डं वु के विनाय स्वाहा ॥ वु के
नर सि ॥ डं म धन स्वाहा ॥ म धन सि ॥ डं अ ज काय स्वाहा ॥ अ सा
सि ॥ डं सर्व पाय प्र सम नाय स्वाहा ॥ र के का सि ॥ डं वज्र सह को
नाय स्वाहा ॥ अ व सि ॥ डं सर्व क सु प्र सम नाय स्वाहा ॥ क देव ग रा
त्रि ना ॥ डं अ प्र म हे न वजाय स्वाहा ॥ क ज ना ॥ डं वजा य स्वाहा
हा ॥ इति कु ॥ डं सर्व पाय द हन वजाय म ध पाय द क सा ना

हा सा ॥ डं वज्र पू र स्वाहा ॥ अ द ग ॥ डं वज्र वेगाय स्वाहा ॥ न के
डं वज्र द सम नाय स्वाहा ॥ को ॥ डं वज्र विज्ञाय स्वाहा ॥ अ प न गी
डं वज्र महा वनाय स्वाहा ॥ मा सा ॥ स्वा ना ॥ क र गू षे स्वाहा ॥ डं वज्र
ध सि र स्वाहा ॥ अ का प्र को ॥ डं अ १ सर्व संप ले स्वाहा ॥ अ न ज ध
त्रि ज्ञा ॥ डं अ १ द र्शन राय स्वाहा ॥ को र स अ दि पे ॥ डं वज्र
ना काय स्वाहा ॥ न व ॥ अ न वा ही न व्य ॥ प ला ॥ व ध कृ ति ॥
न व्य न ॥ ॥ गु रा पा त त ॥ अ प ल व न र्थ ही य के ॥ डं वज्र सु त्र
अ ॥ ० नि म नु न ॥ प्रि प्र द सि ना ॥ अ वा म पा नि शु वा धि स न

तत्त॥ सुसिवाब्द॥ अना रुति यन्वा वादन॥ नति॥ नृं जन सर्वमि
द्धि महो हरे वं ज्ञानत्र माहं ये दम वं सिद्धि प्रदायकं॥ मने न गत्य न
ततो अज्ञानं खलं वन हा स्य॥ इव ज्ञाने धर्म॥ प्रोक्तं कृत्वा॥ वं
ग्रास मनो दि जं कृत्वा लोको रुत हान नि विहाय॥ कातो कोता
ज्ञो यद्वा ज्ञ हृदि कमल वं प्राप्ते नो पति मनु नाति पति स्व स्व
विज्ञानि न वि॥ इति ज्ञापि मम न म म्भुता॥ धूप स्रग्मा
मुलये विहाय॥ सो मदी ज्ञम अवा ज्ञान म स्व च वं ज्ञा र्कम

दिहिरानिय पून मो दृष्टा स्नान म त्वर म पं म त्व या क्षी म नील मि
व स म ल सा ह न विहाय॥ दव स के स्नान त ही अ क र्ष ण॥
धूप मं नु॥ ह ग व णी अ म्भु क स त त्या दि॥ अ य मे स रु र्ग म म
नि ग्रा ज्ञ लो हा मी न द्वा स्नान पूजा या य द्वा यी न्या स लो धो
नुति॥ न र्थ न॥ त नो दे व ता या म्भु ल काले न शु क व र्ग य
प्र माने विहाय॥ इति अ च प नं त्या दि॥ पूर्व म ग य त्रि पा
ल मं नु न इ र्ग या न॥ धृत अ र्क दि को न लो प य क च